पद १६४

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी)

दिवाना आपकु नहि धूंडा।।धू.।। विद्या सीखी जोग कमाया। भगवा सिर मूंडा।।१।। ग्यानी बन चित्त भोगकी आशा। साधु जग भोंडा।।२।। बंध मुगति नहीं ब्रह्म तूं साचा। क्यों रोता रंडा।।३।। आत्मभूमिबल मन फल फुली। शरीर जडकुंडा।।४।। त्यज विरोध मत, सकलमती हो। तबहो दिल थंडा।।५।। चिन्मार्ताण्ड बचन जो भूला। खावे जम दंडा।।६॥